12

निर्धन कलीसिया जो धनी थी

(2: 8-11)

सात कलीसियाओं के नाम पत्रों पर विचार करते हुए हमने देखा था कि आम तौर पर उनमें सात विभाजन हैं: (1) अभिवादन, (2) यीशु का विवरण, (3) पूरी कलीसिया की सराहना, (4) पूरी कलीसिया की निंदा, (5) चेतावनी और धमकी, (6) ताड़ना, और (7) प्रतिज्ञा। हम केवल दूसरे पत्र पर पहुंचे हैं, परन्तु हमने पहले ही अपवाद देखा है कि स्मुरने की कलीसिया के नाम पत्र में कोई निंदा नहीं है, इसलिए इसमें कोई चेतावनी या धमकी भी नहीं है। एक और मण्डली थी, जिसे डांट नहीं पड़ी: फिलाडेल्फिया की कलीसिया।

इसका अर्थ यह नहीं कि ये दोनों कलीसियाएं सिद्ध थीं। मण्डली तो लोगों से ही बनती है और लोग सिद्ध नहीं होते (रोमियों 3:23; याकूब 3:2; 1 यूहन्ना 1:8)। परन्तु डांट न पड़ने का अर्थ यह है कि (सभी नहीं तो) इसके अधिकतर सदस्य मसीहियत के प्रति ग भीर थे और कुल मिलाकर वे परमेश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास कर रहे थे। 1 यूहन्ना 1:7 की शब्दावली का इस्तेमाल करें तो ये दोनों मण्डलियां ''ज्योति में चलते हुए'' मसीही लोगों से भरी हुई थीं।

मुझे यह चकित करने वाला लगता है। जुडसोनिया, आरकैंसा की मण्डली पर मुझे गर्व है, जहां मैं काम करता और आराधना करता हूं। हमारे अधिकतर सदस्य परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने का प्रयास करते हैं, शायद जिन मण्डलियों में मैंने काम किया है, उनमें सब से अधिक प्रतिशत इन्हीं का है। तौ भी हम यह नहीं कह सकते कि हमारे शतप्रतिशत सदस्य इतने समर्पित हैं।[1] इससे मेरे मन में एक सवाल आता है कि ''स्मुरने और फिलाडेल्फिया की कलीसियाओं में ऐसा क्या था जो अन्य मण्डलियों में नहीं था?''

इस प्रश्न को ध्यान में रखते हुए कि स्मुरने और फिलाडेल्फिया की मण्डलियों में ऐसा क्या था कि इनमें से किसी को प्रभु की ओर से डांट नहीं पड़ी, स्मुरने (2:8-11) और फिलाडेल्फिया (3:7-13) के नाम दोनों पत्रों की तुलना करें। इस प्रश्न का उत्तर इस प्रस्तुति में और महत्वपूर्ण पाठों में से एक में दिया जाएगा।

स्मुरने की कलीसिया के नाम पत्र सभी पत्रों में से सबसे छोटा है, परन्तु इसमें सबसे

शक्तिशाली संदेश हैं।

कलीसिया (2:8क)

पत्र का आर भ होता है, ''और स्मुरना की कलीसिया के दूत को यह लिख, ...'' (आयत 8क)।

नगर

स्मुरना इफिसुस के उत्तर में लगभग चालीस मील दूर[2] और इफिसुस के दो विरोधी नगरों में से था। (दूसरा विरोधी नगर परगमुम था।) स्मुरना एक बन्दरगाह और व्यापारिक नगर था, जिसमें मसीहियत विरोधी यहूदियों की कुछ आबादी थी।[3] नगर अपनी सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध था और इसे सिक्कों पर ''सुन्दरता और आकार में एशिया में प्रथम'' बताया जाता था। इसे कई बार अपनी चौंकाने वाली आकाश रेखा के कारण ''मुकुट वाला नगर'' भी कहा जाता था: नगर के इर्द-गिर्द भव्य सरकारी इमारतें दिखाई देती थीं।

स्मुरना में फल के प्रकृति के देवता डायोनिसुस सहित जिसे शराब के देवता के रूप में भी जाना जाता था, कई मन्दिर थे (डायोनिसुस के पर्व के समारोह में चलने वाली कामुक गतिविधियों की कल्पना की जा सकती है।) बसंत ऋतु जीवन में नयापन लाती है, जिस कारण मूर्तियों के मानने वाले पुरोहित डायोनिसुस के पर्व से जुड़े समारोह में मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने का बेतुका समारोह मनाते थे। इसे चलाने वाले पुरोहितों को मुकुट दिए जाते थे।

स्मुरना उत्साहपूर्वक रोमी था। 195 ई.पू. तक रोमा देवी के लिए एक मन्दिर बनाया गया था। सौ साल बाद शीतकाल के अभियान के समय रोमी सेना के पास गर्म वस्त्रों की कमी होने पर स्मुरने के लोगों ने उनके वस्त्र उतारकर सेना के लिए भेज दिए थे। 26 ईस्वी में नगर को रोमी सीनेट द्वारा सम्राट तिबरयुस की पूजा के नये मन्दिर के स्थान के रूप में इफिसुस और परगुमम को चुना गया था।

आज स्मुरना को इज़मीर के नाम से जाना जाता है और आज भी यह महत्वपूर्ण नगर है।[4] इज़मीर तुर्की के पश्चिमी तट पर एक प्रमुख बन्दरगाह है, जिसकी आबादी लगभग बीस लाख है। एक यात्री दल के साथ आसिया की सात कलीसियाओं के स्थान को देखने के लिए जाने के समय हमारा मु य ठहराव इज़मीर ही था। प्राचीन नगर के खण्डहरों पर वर्तमान नगर बना होने के कारण उस क्षेत्र में पुरातत्वीय खुदाई बहुत सीमित होती है, परन्तु रोमी जलसेतु आज भी हैं और प्राचीन अगोरा (चौंक) का भी पता चल चुका है।[5] अगोरा में स्मुरने की कलीसिया के नाम पत्र के लेख वाला कांस्य का पत्र है, जो तुर्की जैसे मुस्लिम बहुल देश में होना एक असामान्य बात है।

मण्डली

स्मुरने नगर के बारे में तो हमें काफ़ी पता चल जाता है परन्तु वहां की कलीसिया के बारे में हमारी जानकारी बहुत सीमित है। वहां मण्डली स भवतया पौलुस के इफिसुस में रहते समय बनी थी (प्रेरितों 19:10)। बाइबल से बाहर के आर भक लेखकों ने बताया है कि पोलिकार्प नामक यूहन्ना का एक चेला स्मुरने के मसीही लोगों के अगुओं में से था।[6]

मसीह (2:8ख, ग)

अभिवादन के बाद, पत्र में यीशु का विवरण है: ''जो प्रथम और अन्तिम है; जो मर गया था और अब जीवित हो गया है, ...'' (आयत 8ख, ग)। अध्याय 1 में ''दीवटों के बीच में मनुष्य के पुत्र सरीखा एक पुरुष'' (1:13) देखकर यूहन्ना ''उसके पैरों पर मुर्दा सा गिर पड़ा'' था (1:17क)। फिर यीशु ने उस पर अपना दाहिना हाथ रखते हुए कहा था, ''मत डर; मैं प्रथम और अन्तिम और जीवता हूं। मैं मर गया था और अब देख; मैं युगानुयुग जीवता हूं; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास हैं'' (1:17ख, 18)।

अध्याय 1 वाले दर्शन का भाग, जिसकी एक विशेष मण्डली को बहुत आवश्यकता थी, उसी मण्डली के नाम पत्र में दिया गया। स्मुरने की कलीसिया को प्रभु के ''प्रथम और अन्तिम, और जीवता'' होने की बात सुनना क्यों आवश्यक था? आयत 9 में यीशु ने कहा, ''मैं तेरे *क्लेश* को जानता हूं।'' आयत 10 में उसने कहा, ''जो *दुख* तुझको झेलने होंगे, उनसे मत डर।'' यीशु *दुख सहने* वाली कलीसिया को लिख रहा था, जिसे यह पता होना आवश्यक था कि वह ''प्रथम और अन्तिम है, जो मर गया था और अब जीवित हो गया है।''

जो बना रहेगा

''प्रथम और अन्तिम'' (आयत 8ख) वाक्यांश में यीशु के ईश्वरीय होने को व्यक्त किया गया और मसीही लोगों को यह सच्चाई ज़ाहिर की गई कि रोमियों के दृश्य में से हट जाने के बहुत बाद यीशु ही रहेगा। यानी नियन्त्रण रोम का नहीं, बल्कि यीशु के हाथ में था।

जो जी उठा था

स्मुरना के मसीही लोगों के लिए ''जो मर गया था और अब जीवित हो गया है'' (आयत 8ग) शब्दों का बड़ा महत्व था। यूनानी विद्वानों से हमें पता चलता है कि मूल लेख की भाषा में यह वाक्यांश इस प्रकार है: मैं ''ही हूं जो *वास्तव में* मर गया था, और मैं ही हूं जो *वास्तव में* जी उठा है।'' मूर्तियों के पुजारियों ने प्रकृति के अपने देवता के लिए मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के समारोह का मज़ाक बनाया होगा, परन्तु मरे हुओं में से सचमुच में जी उठने वाला केवल यीशु था!

यीशु स्मुरने के मसीही लोगों को बताना चाहता था कि यदि वे अपने विश्वास के लिए मर भी जाएं, तौ भी मृत्यु और अधोलोक पर अधिकार उसी का है (देखें 1:18ख)। यानी मनुष्य उनके साथ जो भी करें, उसमें उसे बदल देने की सामर्थ थी।

सराहना (2:9, 10)

इससे हम सराहना पर आ गए हैं, जो इस संक्षिप्त पत्री का सार है। स्वीकृति के यीशु के शब्दों का आर भ इस प्रकार हुआ, ''मैं तेरे क्लेश और दरिद्रता को जानता हूं'' (आयत 9क)।[7] ''क्लेश'' शब्द का अनुवाद उस यूनानी शब्द से हुआ है, जिसका अर्थ बड़े पत्थर के नीचे कुचले जाने की तरह ''दबना या कुचले जाना'' है। इस शब्द से गेहूं पीसने के लिए रोमियों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले चक्की के बड़े-बड़े पत्थर (मत्ती 18:6) या जैतून का तेल निकालने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले विशाल कोहलुओं का ध्यान आता है। स्मुरने के मसीही लोग बड़े तनाव और दबाव में थे। उनके लिए जीवन का अर्थ पीड़ित होना ही था।

वास्तव में यीशु उनसे कह रहा था कि ''मैं जानता हूं कि तुम कैसे तनाव में हो। तुम सताए जा रहे हो और तु हारे नामों की निंदा हो रही है। तुम में से कइयों को अपने परिवारों से निकाल दिया गया है। कइयों की नौकरियां छूट गई हैं और तु हारे बच्चे भूखे हैं। तुम में से कइयों को जेल में डाल दिया जाएगा और कइयों को मार डाला जाएगा। मैं जानता हूं कि यह कठिन है!''

सभी पत्रों की तरह इसमें भी अनुवाद हुए शब्द ''जानता हूं'' का अर्थ सरसरी जानकारी होना नहीं, बल्कि पूरी तरह से जानना है। यीशु जानता था कि पीड़ित होना कैसा लगता है। गतसमनी के बाग में (''गतसमनी'' का अर्थ ''कोल्हू'' है), दिलो दिमाग पर अत्यधिक दबाव होने के कारण वह पुकार उठा था, ''हे पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले'' (लूका 22:42क)!

यीशु को तब भी पता होता है, जब आप और मैं कष्ट में होते हैं, जब हमें लगता है कि हम तो दबाव के नीचे पिस जाएंगे। उसे मालूम है और वह समझता है (इब्रानियों 4:15)।

यह ''दबना'' कई रूपों में हो सकता है। स्मुरने में इसकी दो अभिव्यक्तियां थीं।

निर्धन (परन्तु धनी)

ये मसीही लोग निर्धन थे। यीशु ने कहा, ''मैं तेरी ... दरिद्रता को जानता हूं''[8] (आयत 9क)। कुछ लोग मसीही बनने के समय निर्धन होंगे (1 कुरिन्थियों 1:26-29)। शेष जिनके पास स पत्ति थी सुसमाचार को मानने पर ऐसे आर्थिक दबाव में चल रहे थे जैसा कि उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था।[9] यीशु उनकी दरिद्रता को जानता था: ''वह ... तु हारे लिए कंगाल बन गया'' (2 कुरिन्थियों 8:9)।

फिर यूहन्ना ने एक आश्चर्यजनक कोष्ठक वाली बात जोड़ी: ''(परन्तु तू धनी है)'' (आयत 9ख)। उन्हें अपने आप पर शर्मिंदा होने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि जिसमें उन्हें वास्तव में धनी होना चाहिए था, वे उसमें धनी भी थे। मैं यीशु के उनसे यह कहने की कल्पना कर सकता हूं, ''तु हारे परिवार तु हारे विरुद्ध हो गए हो सकते हैं, परन्तु अब तुम

परमेश्वर के परिवार के लोग हो। तु हारी नौकरियां छूट गई हो सकती हैं, परन्तु अब तु हें उससे भी बड़ी बुलाहट मिली है। तु हारे शरीर पर फटे-पुराने कपड़े हो सकते हैं, परन्तु तु हें धार्मिकता के वस्त्र पहनाए गए हैं। तु हारी जेबें खाली हो सकती हैं, परन्तु तु हारे मन भरे हो सकते हैं। तुम सताए जा रहे हो सकते हो, परन्तु तुम आनन्दित हो सकते हो कि तुम इस योग्य गिने गए।[10] तु हारे शरीरों को खतरा हो सकता है, परन्तु तु हारी आत्माएं सुरक्षित हैं। तु हारे नाम पृथ्वी पर से मिटाए जा सकते हैं, परन्तु तु हारे नाम उस बड़े श्वेत सिंहासन के पास श्रद्धा से लिए जाते हैं। मनुष्य तु हारे विरुद्ध हो सकते हैं, परन्तु परमेश्वर तु हारे साथ है!'' ''यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?'' (रोमियों 8:31ख)।

यीशु उन्हें याद दिलाना चाहता था कि उन्हें आत्मिक धन मिला है:[11] उन्हें पिछले पापों से उद्धार दिया गया था (रोमियों 3:25) और दान के रूप में उन्हें परमेश्वर का आत्मा मिला था (प्रेरितों 2:38)। यीशु उनका मध्यस्थ था (1 तीमुथियुस 2:5) और परमेश्वर उनका पिता था (रोमियों 1:7)। वे परमेश्वर के परिवार में थे (इफिसियों 2:19) और उससे किसी भी समय बात कर सकते थे (याकूब 5:13)। मन की शांति (फिलिप्पियों 4:7) के साथ सदा रहने वाली प्रसन्नता उनकी हो सकती थी (1 पतरस 3:14; 4:14)। स्वर्ग की आशा हमारे मनों में है (कुलुस्सियों 1:5)। स्मुरने के मसीही लोग उस बात में समृद्ध थे, जो उनसे छीनी नहीं जा सकती थी!

हमें यह पता होना आवश्यक है कि सच्चा धन क्या है। कुछ लोगों ने अपने आप को धन और स पत्ति जमा करने के लिए समर्पित कर दिया है, परन्तु धन से वह नहीं खरीदा जा सकता जो सचमुच आवश्यक है: धन से दवाइयां खरीदी जा सकती हैं, परन्तु इससे स्वास्थ्य नहीं खरीदा जा सकता; धन से सेवा खरीदी जा सकती है, परन्तु इससे मित्र नहीं खरीदे जा सकते; धन से मनोरंजन खरीदा जा सकता है, परन्तु इससे आनन्द नहीं खरीदा जा सकता। इब्रानियों के लेखक ने कहा है, ''तु हारा स्वभाव लोभरहित हो और जो तु हारे पास है, उसी पर सन्तोष करो'' (इब्रानियों 13:5क)। यीशु का आग्रह है कि ''अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं'' (मत्ती 6:20)।

दुखी हुए (परन्तु स्थिर)

उनके क्लेश का दूसरा रूप सताया जाना था। उपलब्ध प्रमाण से यह संकेत मिलता है कि स्मुरने के विश्वासी मसीहियों का जीवन रोमी साम्राज्य में रहने वाले अन्य सब मसीहियों से अधिक संकटपूर्ण था। यीशु ने सताव के विषय को इन शब्दों में बताया था: ''... जो लोग अपने आपको यहूदी कहते हैं और हैं नहीं, पर शैतान की सभा हैं, (मैं) उनकी निन्दा को भी जानता हूं''[12] (आयत 9)।

यीशु ने ''जो अपने आप को यहूदी कहते हैं और हैं नहीं'' किन्हें कहा? ये सांसारिक

यहूदी थे, जिन्होंने यीशु को मसीहा नहीं माना था और इस प्रकार अपने आप को परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों से बाहर कर लिया था।[13] पौलुस ने पहले लिखा था:

> क्योंकि वह यहूदी नहीं, जो प्रकट में यहूदी है; और न वह खतना है, जो प्रकट में है, और देह में है। पर यहूदी वही है, जो मन में है; और खतना नहीं है, जो हृदय का और आत्मा में है; न कि लेख का: ऐसे की प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से होती है (रोमियों 2:28, 29)।

इन अविश्वासी यहूदियों के सभास्थल को ''शैतान की सभा'' कहा जाता था क्योंकि वे अपने आप को मसीही लोगों को सताने के लिए[14] शैतान को सौंपते थे।[15]

सताव के गढ़ में, जिसे स्मुरना कहा गया है, हमें वही शक्तिशाली संयोग मिलता है जिसने यीशु और पौलुस के काम में रुकावट डाली: *प्रभावशाली यहूदी* जो *रोमी अगुओं* के मन बिगाड़ने में सक्षम थे। दृढ़ निश्चय किए हुए यहूदियों ने रोमी राज्यपाल को यीशु को क्रूस देने के लिए मना लिया था। पौलुस ने सबसे अधिक विरोध वहीं पाया, जहां अपनी बात मनवाने के लिए यहूदी लोगों का सरकारी अधिकारियों पर काफ़ी राजनैतिक प्रभाव था।

स्मुरने में यहूदियों द्वारा सताव का एक पहलू निंदा करना था (आयत 9) ''निंदा'' का अर्थ ''किसी को आघात पहुंचाने के प्रयास में उसके विरुद्ध बोलने का कार्य'' है।[16] यह यहूदियों द्वारा यीशु के नाम की निंदा भी हो सकता है या इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि यहूदी लोग मसीही लोगों के नाम की निंदा कर रहे थे। यहूदी लोग यीशु को ''लटकाया गया'' कहते थे (देखें गलातियों 3:13) और मसीही लोगों का मज़ाक उड़ाते थे। AB में है, ''मैं जानता हूं कि ... *तुम* किस प्रकार अपमानित होते, ज़लील होते और बदनाम होते हो।'' स भवतया यहूदी लोगों द्वारा अपमानित होने वाले यीशु और उसके अनुयायी दोनों थे। आपका तो पता नहीं, परन्तु कोई मेरे बारे में कुछ बुरा कहे तो मुझे अच्छा नहीं लगता!

यहूदी लोग अपमान करने की गति और बढ़ाने वाले थे, इस कारण यीशु ने आगे कहा, ''जो दुख तुझ को झेलने होंगे, उनसे मत डर: क्योंकि देखो, शैतान तुम में से कितनों को जेलखाने में डालने पर है ...'' (आयत 10क, ख)। मसीही लोगों को जेल में डालने के लिए रोमी अधिकारियों को विवश करने वाले यहूदी ही होंगे, परन्तु यीशु ने इस कार्य का श्रेय शैतान को दिया। यहूदी लोग शैतान का कार्य कर रहे होंगे।

जेल की बात करते हुए यीशु ने उस कष्ट के उद्देश्य पर बदल दिया: ''ताकि तुम परखे जाओ'' (आयत 10ख)।[17] शीघ्र ही यह स्पष्ट हो जाना था कि किसका विश्वास सचमुच मज़बूत है और किसका नहीं।

यीशु ने उन्हें यह भी बताया कि उनकी परख कितनी देर तक होगी: ''और तु हें दस दिन तक क्लेश उठाना होगा'' (आयत 10ग)। हमने पहले देखा था कि प्रकाशितवाक्य में ''दस'' स पूर्णता, भरपूरी या शक्ति का प्रतीक है।[18] हमने और भी देखा था कि ''दस'' को इसी से गुणा करने (100 या 1,000 मिलते हैं) का महत्व इससे भी अधिक था। परन्तु आयत 10 में ''दस'' अंक अपने साथ गुणा नहीं होता; यह अकेला ही रहता है। इस कारण

यह स पूर्ण सताव के लिए है, परन्तु सीमाओं वाले सताव के लिए।[19] यूजीन पीटरसन के लेख में कहा गया है, ''यह सदा तक नहीं रहेगा।''[20] परमेश्वर की संतान के लिए हर बुराई अस्थाई है (अय्यूब 3:17) और सब समस्याएं अन्तकाल की तुलना में केवल कुछ ही समय के लिए हैं (2 कुरिन्थियों 4:17; याकूब 4:14)।

आयत 10 के अन्तिम भाग में यीशु ने उनके सताव पर अपनी टिप्पणियां प्रकाशितवाक्य के सबसे प्रसिद्ध शब्दों में कहीं: ''प्राण देने तक विश्वासी रह; तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा'' (आयत 10घ)। संदर्भ में ''प्राण देने तक'' वाक्यांश का अर्थ '' *यदि इसके लिए* तु हें मरना भी पड़े'' है। AB में है ''मरने तक वफ़ादारी से विश्वासी रह-[अर्थात] यदि इसके लिए तुझे मरना भी पड़े।''[21]

यीशु ने इन मसीही लोगों को कष्ट *से* छुड़ाने की प्रतिज्ञा नहीं की; बल्कि उसने उन्हें उनकी समस्याओं *में* से सुरक्षित निकाल लेना था। प्रकाशितवाक्य में सिखाया गया है कि परमेश्वर के विश्वासी बालक के लिए विजय है, परन्तु इसमें कष्ट से अलग विजय की प्रतिज्ञा नहीं है। यीशु मसीही लोगों को आश्वस्त करना चाहता था कि वे विजयी होंगे, परन्तु वह उन्हें यह भी समझाना चाहता था कि इसके लिए उन्हें पहले मरना पड़ सकता है।

अब हम इस पाठ के आर भ में पूछे गए प्रश्न कि स्मुरने और फिलाडेल्फिया की मण्डलियों में साझा क्या था, जिससे प्रभु की ओर से उनमें से किसी को भी डांट नहीं मिली, का उत्तर देने को तैयार हैं? याद रखें कि हम ने फिलाडेल्फिया की कलीसिया के नाम पत्र में आगे देखकर स्मुरने की परिस्थिति को जान लिया है:

> देख, मैं शैतान के उन सभावालों को तेरे वश में कर दूंगा जो यहूदी बन बैठे हैं, पर हैं नहीं, बरन झूठ बोलते हैं-देख, मैं ऐसा करूंगा, कि वे आकर तेरे चरणों में दण्डवत करेंगे, और यह जान लेंगे, कि मैं ने तुझ से प्रेम रखा है। तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है, इसलिए मैं भी तुझे परीक्षा के उस समय बचा रखूंगा, जो पृथ्वी पर रहने वालों के परखने के लिए सारे संसार पर आने वाला है (3:9, 10)।

इन मण्डलियों में ऐसी क्या बात थी कि दोनों ही *सताई* जा रही थीं, न केवल सताई जा रही थीं, बल्कि उनके जीवन को हर प्रकार से दुखी करने के लिए हर साधन का इस्तेमाल करने वाले शरारती यहूदियों द्वारा सताई जा रही थीं।

दोनों मण्डलियों के सताव और इस बात में कि इनके अधिकतर सदस्यों को प्रभु की स्वीकृति थी, में क्या स बन्ध हो सकता है? स बन्ध यह है: जैसे तूफ़ान वृक्षों से सूखी टहनियों को उतार देता है, जैसे आग धातुमल को जला देती है, वैसे ही सताव कलीसिया को शुद्ध करता है। परख के समय सचमुच में धार्मिक लोगों को अपने आप को धार्मिक मानने वालों से अलग किया जाता है; समर्पित लोगों को दोगले लोगों से अलग किया जाता है; विश्वासियों को कायरों से अलग किया जाता है। जी. कै पबेल मोरगन ने एक बार लिखा

था कि ''सताई जाने वाली मसीह की कलीसिया ही असली मसीह की कलीसिया है। [दूसरी ओर] उत्साहित की जाने वाली मसीह की कलीसिया ही नकली मसीह की कलीसिया है।''[22]

सताया जाना कोई नहीं चाहता। पौलुस ने लिखा कि ''राजाओं और सब ऊंचे पद वालों'' के लिए प्रार्थना की जाए, ताकि ''हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और ग भीरता से जीवन बिताएं'' (1 तीमुथियुस 2:1, 2)। फिर उसने कहा, ''यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता और भाता भी है'' (1 तीमुथियुस 2:3)। इसके साथ ही हमें यह भी समझना आवश्यक है कि सताव कलीसिया पर होने वाली सबसे बुरी बात नहीं है। परमेश्वर देह को शुद्ध करने के लिए इसका इस्तेमाल कर सकता है।

पौलुस की एक और बात भी ध्यान में रखी जानी आवश्यक है: ''पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं, वे सब सताए *जाएंगे* '' (2 तीमुथियुस 3:12)। हो सकता है कि हम पर आने वाले कष्ट वैसे न हों जैसे स्मुरने के लोगों पर आए थे, परन्तु पौलुस ने चेतावनी दी कि यदि हम विश्वासी बने रहना चाहते हैं तो परीक्षाएं तो अवश्य आएंगी। मेरा ध्यान चालीस साल पहले के अपने पूर्णकालिक काम पर जाता है। हमारे सदस्यों में से एक किसी क पनी में काम करता था, जहां उस पर काम करने का दबाव डाला जाता था, जो उसके विवेक के विरुद्ध हो। उसने इनकार कर दिया; और नतीजा यह हुआ कि हर वर्ष उन्नति के लिए उसे पास कर दिया गया। तौ भी वह अपने विश्वास के प्रति ईमानदार रहा और आज भी प्रभु का विश्वासी है। एक और सदस्य जिसे ऐसी ही परिस्थिति का सामना करना पड़ा, ने तर्क दिया, ''नौकरी पर बना रहने के लिए मुझे यह सब करना ही पड़ता है और निश्चय ही परमेश्वर चाहता है कि मैं अपने परिवार की देखभाल के लिए यह सब करूं।'' वह दबाव के आगे झुक गया और उसका कारोबार काफ़ी बढ़ गया। जहां तक मैं जानता हूं कि वह कई सालों से प्रभु का विश्वासी नहीं हुआ।

अपनी परख करना भी आवश्यक है। यदि हम अपने जीवनों में आने वाले किसी सताव से अवगत नहीं हैं, तो शायद हम अपने विश्वास से समझौता कर रहे हैं और अपने विश्वास को छिपा रहे हैं।

शांति (2:11)

पत्र शांति के संदेश के साथ समाप्त हो जाता है (आयत 11)। यीशु ने स्मुरने के मसीही लोगों को केवल यह सूचित करने के लिए नहीं लिखा कि कष्ट आने वाला है, बल्कि वह उन्हें शांति और सामर्थ देना चाहता था ताकि वे आने वाली समस्या पर काबू पा सकें।

यीशु ने पहले ही उन्हें काफ़ी शांति दी थी। उसने इस बात पर ज़ोर दिया था कि मृत्यु पर शक्ति उसी के पास है (2:8)। फिर उसके कहने का अर्थ था कि ''मैं तु हारी मुश्किलें जानता और समझता हूं'' (देखें 2:9)। उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि उनके कष्ट की सीमाएं हैं (2:10क)।

उन्हें दी गई उसकी एक विशेष प्रतिज्ञा यह थी कि यदि वे ''मरने तक विश्वासी'' रहते तो उसने उन्हें ''जीवन का मुकुट'' देना था (2:10ख)।[23] अनुवादित शब्द ''मुकुट'' यूनानी शब्द *stephanos* से लिया गया है। ''मुकुट'' के लिए एक और शब्द है, जिससे हमें *diadem* मिला है, जो राजसी मुकुट या राजा के मुकुट के लिए है। इसके विपरीत *stephanos विजय* के मुकुट के लिए है। इस शब्द का इस्तेमाल खेलों में विजय पाने वालों के सिर पर रखे जाने वाले हार आदि के लिए किया जाता था।[24] यीशु की प्रतिज्ञा में मुकुट में *जीवन* अर्थात अनन्त जीवन को शामिल किया गया है। मूर्तियों के पुरोहितों को शीघ्र नष्ट होने वाले मुकुट दिए जाते होंगे, परन्तु विश्वासी मसीहियों को अनन्तकाल तक रहने वाला मुकुट मिलना था, जो कभी नष्ट नहीं होना था!

''आग की झील''
(12:14,155; 21:8)

आयत 11 में यीशु ने इस प्रतिज्ञा के साथ शांति के अपने शब्दों को चरम तक पहुंचा दिया: ''जो जय पाए, उसे दूसरी मृत्यु से हानि न पहुंचेगी[25]'' (11ख; देखें 20:6)। ''दूसरी मृत्यु'' प्रकाशितवाक्य के अन्त और आगे की ओर संकेत करती है। मृत्यु का चित्रण करने के बाद यूहन्ना ने लिखा कि ''मृत्यु और अधोलोक आग की झील में डाले गए। यह आग की झील दूसरी मृत्यु है; और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया'' (20:14, 15; देखें 21:8)। ''दूसरी मृत्यु'' नरक में परमेश्वर से अनन्तकाल की जुदाई है![26]

अपने विश्वास के लिए मरने पर स्मुरने के मसीही लोगों को परेशानी नहीं होनी थी, क्योंकि यीशु उन्हें जिला सकता था और उसने उन्हें जिला देना था। उन्हें दूसरी मृत्यु की चिंता होनी चाहिए थी (देखें लूका 12:4, 5)। यदि वे विश्वासी रहते तो ''दूसरी मृत्यु से हानि'' नहीं होनी थी (आयत 11ख)!

हम जिन्हें अपने विश्वास के कारण अपने प्राणों से हाथ धोने का खतरा कभी नहीं हुआ, स्मुरने के मसीही लोगों से कहे यीशु के शब्दों को नहीं समझ सकते। प्रकाशितवाक्य लिखे जाने के बाद के प्रचण्ड दिनों में ये शब्द उन्हें सामर्थ देने वाले थे। यह ज़ोर देने के लिए कि उनके लिए इन अक्षरों का क्या व्यावहारिक महत्व था (और है), मैं इन मसीही लोगों तथा विशेषकर उनके अगुओं में से एक पोलिकार्प के सामने आई स्थिति का संक्षिप्त विवरण बताना चाहूंगा।

पहली कलीसिया के इतिहासकार यूसबियुस ने बताया है कि स्मुरने के मसीही लोगों से कैसा व्यवहार होता था:

> ...आस-पास खड़े लोग चाबुकों से घायल उनके शरीरों को लहू और धमनियों को देखकर, जिससे मांस कटकर, शरीर के भीतरी भाग दिखाई दे रहे थे, बड़े अचंभित थे। उन्हें समुद्री शंखों के ऊपर नुकीले और तीखे भालों पर लिटाया

जाता और हर प्रकार का दण्ड और यातना देने के बाद अंत में जंगली जानवरों के आगे फैंक दिया जाता।[27]

इस दौरान मसीही लोगों ने बुज़ुर्ग पोलिकार्प को छिपाने का प्रयास किया, परन्तु एक लड़के को पीटा गया कि वह बताए कि वह बूढ़ा कहां रह रहा था। जब वे पोलिकार्प को ढूंढ़ने के लिए निकले, तो उसने उसे गिर तार करने के लिए आए लोगों के लिए खाना बनाया और जब वे खा चुके तो उसने प्रार्थना की। अन्त में वे उसे स्टेडियम में ले गए, जहां खून की प्यासी भीड़ जिसमें यहूदी भी थे, इकट्ठी हुई थी।

राज्यपाल ने उसे यह कहते हुए कि ''कैसर की सौगंध खा ... और मैं तुझे छोड़ दूंगा। मसीह की निंदा कर'' उससे मसीह का इनकार करने को कहा। पोलिकार्प ने उत्तर दिया, ''छियासी साल तक मैंने उसकी सेवा की है, और उसने मेरे साथ कोई बुरा नहीं किया; और अब मैं अपने राजा की निंदा कैसे कर सकता हूं जिसने मुझे बचाया है ?''

राज्यपाल द्वारा जंगली जानवरों और आग में फैंके जाने की धमकी के प्रयास के बाद, उस बूढ़े ने उत्तर दिया, ''तुम मुझे उस आग की धमकी देते हो जो एक पल के लिए जलती और जल्द ही बुझ जाती है, क्योंकि तु हें आने वाले न्याय और दुष्टों के लिए अनन्तकाल तक जलने वाली आग के दण्ड का कुछ भी ज्ञान नहीं है। पर तू देरी क्यों करता है ? जो भी चाहता है जल्दी से कर ले।''

यहूदियों की अगुआई में शोर मचाती भीड़ उस बूढ़े मसीही को जलाने के लिए लकड़ियां ढूंढ़ने के लिए तितर-बितर हो गई। चिता तैयार होने पर वे पोलिकार्प को खूंटे से मेखों में जड़ने लगे, परन्तु उसने कहा, ''जिसने मुझे आग को सहने की सामर्थ दी है, वह मुझे इस ढेर पर स्थिर रहने की सामर्थ भी देगा।'' उसने खूंटे के पीछे अपने हाथ करके उन्हें कस लिया और प्रार्थना की। उसके ''आमीन'' कहने के बाद जल्लादों ने आग जला दी। पोलिकार्प इस आश्वासन से मर गया कि वह ''दूसरी मृत्यु की हानि'' नहीं उठाएगा।[28]

सारांश

एक बार फिर यीशु ने चाहा कि हम इसे अपने ऊपर लागू करें। उसने आगे कहा, ''जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है'' (2:11क)। हैनरी वार्ड बीचर ने एक बार टिप्पणी की थी कि ''पूरे देश में गंजे पुराने पापियों की भरमार है जिनके बाल उन असं य प्रवचनों के कारण झड़ गए, जो उन्हें निशाना बनाकर दिए गए थे, परन्तु उनके सिर से होते हुए पिछले बैंच पर बैठे व्यक्ति को लग गए।''[29]

हर मण्डली को इसे अपने ऊपर लागू करने की आवश्यकता है। हर मण्डली के अगुओं का लक्ष्य हर सदस्य को मसीह के काम के लिए समर्पित करने के लिए प्रोत्साहित करना होना चाहिए। इसके अलावा हर व्यक्ति के लिए इसे अपने ऊपर लागू करना आवश्यक है। हम में से हर किसी को ऐसे प्रश्न पूछने चाहिए: ''क्या मैं सचमुच प्रभु का विश्वासी हूं ?''; ''क्या मैं अपने विश्वास के लिए मरने को तैयार हूं ?''; ''यदि मुझे आज

मरना पड़े तो क्या मुझे जीवन का मुकुट मिलेगा?''

स्मुरने की कलीसिया के नाम पत्र में ज़ोर दिया गया है कि हम में से हर कोई उन बातों में धनी हो सकता है, जो सचमुच महत्व की हैं। यदि आपको वह धन चाहिए जिसे संसार छीन नहीं सकता, तो *अभी* यीशु की सेवा करने का निश्चय कर लें![30]

सिखाने वालों और प्रचारकों के लिए नोट्स

इस कलीसिया को लौदीकिया की मण्डली (''धनी कलीसिया जो निर्धन थी'') से अलग दिखाने के लिए मैं ''निर्धन कलीसिया जो धनी थी'' शीर्षक का इस्तेमाल करता हूं। बहुत से प्रचारक ''कष्ट सहते पवित्र लोग,'' ''जब कष्ट आ पड़े,'' ''कष्ट सहने के लिए तैयार रहो,'' या ''मृत्यु के चिह्न के नीचे कलीसिया'' जैसे शीर्षक वाले पाठों का इस्तेमाल करते हुए स्मुरने के लोगों के कष्टों को उघाड़ते हैं।

यह पाठ कष्ट के विषय के आस-पास भी बनाया जा सकता है: (1) ''कष्ट का महत्व,'' (2) ''कष्ट सहना सीखना।'' दूसरे शीर्षक के नीचे इन विषयों (सभी आयत 9 से) पर चर्चा की जा सकती है: ''कष्ट पर विजय कैसे पाएं,'' ''दरिद्रता पर विजय कैसे पाएं'' और ''निंदा पर काबू कैसे पाएं।''

टिप्पणियां

[1]यह बात न्याय के रूप में नहीं, बल्कि फल दिखाने के रूप में है (मत्ती 7:16)। [2]इस पुस्तक में पहले दिया गया ''आसिया की सात कलीसियाएं और पतमुस टापू'' का मानचित्र देखें। [3]नगर में आज भी काफ़ी यहूदी जनसं या है। [4]सातों नगरों के कई स्थलों पर आज भी कस्बे हैं, परन्तु महत्वपूर्ण नगर के रूप में केवल स्मुरना/इज़मीर ही है। [5]अगोरा की मूर्तियां इज़मीर के पुरातत्वीय संग्रहालय में रखी हैं। [6]आधुनिक लेखकों को पोलिकार्प को ''स्मुरना का बिशप'' कहना अच्छा लगता है; परन्तु कलीसिया की आर भक शताब्दियों में मण्डलियों की देख-रेख ऐल्डरों की *बहुसं या* करती थी, जिन्हें बिशप या पास्टर भी कहा जाता था (प्रेरितों 20:17, 28)। पोलिकार्प स्मुरने की कलीसिया के ऐल्डरों में से एक हो सकता है। [7]KJV में प्रत्येक पत्र का मु य भाग ''मैं तेरे कामों को जानता हूं'' शब्दों से आर भ होता है। यूनानी शास्त्र में, ये शब्द कुछ पत्रों के मु य भाग के आर भ में मिलते थे, परन्तु सभी के नहीं। [8]यूनानी शब्द के अनुवाद ''दरिद्रता'' का अर्थ ''कठिनाई से पाना'' नहीं, बल्कि जीवन की आवश्यकताओं से भी ''वंचित होना'' है। [9] आम तौर पर मसीही लोगों की स पत्ति जब्त कर ली जाती थी। उनकी स पत्ति उनके पास रखने की अनुमति देने के बावजूद उन्हें आम तौर पर उसे बाज़ार में बेचने या खरीदने की अनुमति नहीं होती थी। [10]देखें मत्ती 5:10-12.

[11]देखें याकूब 2:5. [12]''शैतान'' का अर्थ ''निंदा करने वाला'' है। यूहन्ना के समय में मसीही लोगों को बदनाम करने वाले लोग मूल निंदा करने वाले द्वारा भरमाए गए थे। [13]हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले अधिकतर लोग यह सिखाते हैं कि कुछ अर्थ में यहूदी लोग आज भी परमेश्वर के विशेष लोग हैं और परमेश्वर उन्हें आज भी प्राथमिकता देता है। नये नियम में, अब्राहम के वंशज होने पर बल नहीं दिया गया, बल्कि परमेश्वर की मु य दिलचस्पी *आत्मिक* इस्राएल से है: जिन्होंने सुसमाचार की बात मानकर अपने आप को परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों के आगे सौंप दिया है। (देखें गलातियों 3:26-29)। परमेश्वर यहूदियों से वैसे ही प्रेम करता है, जैसे सब लोगों से, परन्तु वह उनका उद्धार दूसरों से अलग ढंग से नहीं करता (प्रेरितों 10:34, 35);

यानी उनके लिए भी यीशु पर विश्वास करके उसकी आज्ञा मानना आवश्यक है (यूहन्ना 8:21; मत्ती 7:13, 14)। [14]यीशु ने उन यहूदियों की बात की थी जो अब्राहम के वंशज होने का दावा करते थे, परन्तु वास्तव में वे शैतान की आत्मिक संतान थे (यूहन्ना 8:39-47)। [15]शैतान ''ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण'' कर सकता है (2 कुरिन्थियों 11:14)। उसकी अपनी सभाएं और कलीसियाएं, अपने भविष्यवक्ता और अपने प्रचारक हैं। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह पवित्र शास्त्र से उद्धृत कर सकता है (मत्ती 4:6)। इसलिए हमारे लिए आवश्यक है कि ''आत्माओं को परखें कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यवक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं'' (1 यूहन्ना 4:1)। यीशु ने उन यहूदियों की बात की थी जो अब्राहम के वंशज होने का दावा करते थे, परन्तु वास्तव में वे शैतान की आत्मिक संतान थे (यूहन्ना 8:39-47)। [16]NIV के अनुवाद में ''बदनामी'' शब्द है। [17]कष्ट का महत्व देखा जा सकता है। पढ़ें याकूब 1:2-4 और 1 पतरस 1:6-9. [18]इस पुस्तक में पहले आया ''प्रकाशितवाक्य में प्रयुक्त सांकेतिक अंक'' शीर्षक वाला चार्ट देखें। [19]''दस दिन'' की सांकेतिक व्या या का सुझाव दिया जाता है क्योंकि (1) ऐसा नहीं लगता कि कोई सताव सचमुच दस दिनों तक ही रहे, (2) ऐसा नहीं होता कि कोई सताव *केवल* दस दिन ही हो और (3) जब तक विशेष कारणों से प्रकाशितवाक्य में अंकों की व्या या उनके मूल अर्थ में नहीं करते तब तक उनकी व्या या प्रतीकात्मक करनी चाहिए। ''दस दिन'' का अर्थ समय की विशेष अवधि या समय की सामान्य अवधि है या नहीं, इससे 2:10 का संदेश प्रभावित नहीं होता। (''दस दिन'' का एक और विचार बताया जा सकता है कि यह सताव के दस कालों को दर्शाता है। संदर्भ में कोई बात इस व्या या को उचित नहीं ठहराती।) [20]यूजीन एच. पीटरसन, *द मैसेज: न्यू टैस्टामेंट विद सा ज़ एण्ड प्रोवर्बस* (कोलोराडो स्प्रिंगस, कोलोराडो: नवप्रैस पब्लिशिंग ग्रुप, 1995) 611.

[21]जब भी मैं इन शब्दों को पढ़ता हूं, मैं उन छोटी असुविधाओं की जो मुझे कभी-कभी होती हैं, तुलना आर भिक मसीही लोगों की कठिनाइयों से करता हूं और मुझे अपनी शिकायतों पर लज्जा आती है। [22]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 571. [23]याकूब 1:12. ऐसी ही बात कहता एक और पद है देखें 1 कुरिन्थियों 9:25; 2 तीमुथियस 4:8; 1 पतरस 5:4. [24]*Stephanos* मुकुट का इस्तेमाल अन्य परिस्थितियों में इसे पाने वालों के स मान में भी किया जाता था। [25]मूल शास्त्र में, ''नहीं'' शब्द को रेखांकित करके मोटा किया जाने की तरह, ''नहीं'' शब्द के बल को दोगुना करने के लिए, दोहरे नकारात्मक का इस्तेमाल किया गया है। यानी यीशु यही कह रहा था, ''जो जय पाए, *बिल्कुल पक्की बात है* कि उसको हानि नहीं होगी। ...'' [26]मृत्यु की परिभाषा ''अलगाव'' के रूप में दी जा सकती है: शारीरिक मृत्यु देह से आत्मा का अलग होना है (याकूब 2:26)। आत्मिक मृत्यु पाप के कारण मनुष्य का परमेश्वर से अलग होना है (यशायाह 59:1, 2)। दूसरी मृत्यु परमेश्वर से अनन्तकाल के लिए अलग होना है (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)। [27]यूसबियुस *एक्लेसिएस्टिकल हिस्टरी* 3.15. [28]वही. [29]विलियम बार्कले, *लैटर्स टू द सेवन चर्चस* (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1957), 28. [30]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाए, तो अविश्वासी मसीहियों को विश्वास में लौटने (गलातियों 6:1; प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16) और बाहरी पापियों को बपतिस्मा लेने के लिए (मरकुस 16:15, 16) प्रोत्साहित किया जाए। (बाहरी पापी वह है जिसका परमेश्वर के साथ वाचा में कभी स बन्ध नहीं रहा है [देखें इफिसियों 2:12, 19], अन्य शब्दों में जो अभी मसीही नहीं हैं।)

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. क्या आपको यह आश्चर्यजनक लगता है कि सात में से दो मण्डलियों को कोई डांट नहीं पड़ी? यदि यीशु ने उस मण्डली के नाम पत्र लिखा होता, जिसमें आप काम करते और आराधना करते हैं तो उसमें कुछ डांट होती?

2. स्मुरने की कलीसिया के बारे में हम क्या जानते हैं ? आर्थिक इतिहास के अनुसार वहां के अगुओं में से एक कौन था ?
3. ''क्लेश'' शब्द का क्या अर्थ है ? उन कुछ ढंगों की सूची बनाएं जिनसे हम सभी जीवन में ''दबाए'' जा सकते हैं।
4. क्या आपको लगता है कि निर्धन लोग प्राय: धनियों से सुसमाचार को अधिक मानने वाले होते हैं ? क्यों ?
5. इस पाठ का शीर्षक ''निर्धन कलीसिया जो धनी थी'' क्यों रखा गया है ? स्मुरने के मसीही किस अर्थ में धनी थे ? यदि आप मसीही हैं, तो आपको लगता है कि आप धनी हैं ?
6. हम में से अधिकतर लोग यह मानेंगे कि हमें जीवन की आवश्यकताओं के लिए धन की आवश्यकता है। परन्तु क्या यह सही है कि धन से वह नहीं खरीदा जा सकता जो वास्तव में आवश्यक है ?
7. वे कौन लोग थे जो कहते थे कि वे यहूदी हैं पर थे नहीं ? क्या सांसारिक यहूदी आज भी परमेश्वर के विशेष लोग हैं ?
8. ''शैतान की मण्डली'' क्या थी ? क्या शैतान कभी-कभी धार्मिक लोगों के द्वारा काम करता है ?
9. ''निंदा'' शब्द का क्या अर्थ है ? क्या आपके नाम की मसीही होने के कारण कभी निंदा हुई है ?
10. पाठ के अनुसार (केवल) ''दस दिन'' रहने वाले क्लेश का क्या महत्व है ?
11. ''मरने तक विश्वासी रह'' का पूरा अर्थ क्या है ? परन्तु यदि हमें शहादत का सामना न भी करना पड़े तो क्या मृत्यु के दिन तक विश्वासी रहना आवश्यक है ?
12. स्मुरने और फिलाडेल्फिया की कलीसियाओं में साझा क्या था ? इससे उन्हें ताड़ना क्यों नहीं मिली ? आम तौर पर कलीसिया पर सताव का क्या असर होता है ?
13. क्या पौलुस ने हमें सताव के लिए प्रार्थना करने को कहा है ? 1 तीमुथियुस 2:1-3 में उसने हमें किसके लिए प्रार्थना करने को कहा ? सताव आने पर हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए ?
14. यदि हम सताए जाने के बारे में बिल्कुल नहीं जानते, तो दो 2 तीमुथियुस 3:12 के अनुसार इससे क्या संकेत मिलेगा ?
15. दूसरी मृत्यु क्या है ? तो फिर ''पहली मृत्यु'' क्या है ? हमें पहली मृत्यु के बजाय दूसरी मृत्यु से क्यों डरना चाहिए ?